Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 01, January-March, 2026, pp. 135-139

जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह राठौड़ के भक्ति–काव्य का विश्लेषणात्मक अनुशीलनः नाथ संप्रदाय एवं आध्यात्मिक समन्वय के परिप्रेक्ष्य में

श्री लाखम सिंह[1*] एवं डॉ. शिव चरण शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: lsrathore317@gmail.com

Citation: *सिंह, लाखम एवं शर्मा, शिव (2026). जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह राठौड़ के भक्ति–काव्य का विश्लेषणात्मक अनुशीलनः नाथ संप्रदाय एवं आध्यात्मिक समन्वय के परिप्रेक्ष्य में. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(01), 135–139.*

सार

भारतीय साहित्य के इतिहास में राजपूताना की छवि मुख्यतः वीर–काव्य की रही है, परंतु यहाँ की माटी ने उच्च कोटि के भक्ति–काव्य को भी जन्म दिया है। मारवाड़ (जोधपुर) के शासक महाराजा मानसिंह राठौड़ (शासनकालः 1803–1843 ई.) का नाम इस भक्ति परंपरा में अत्यंत विशिष्ट है। वे एक अद्वितीय 'राजर्षि' थे, जिन्होंने राजसिंहासन पर आसीन होते हुए भी एक योगी और अनन्य भक्त का जीवन व्यतीत किया। प्रस्तुत शोध–पत्र महाराजा मानसिंह द्वारा रचित 'भक्ति–काव्य' के विविध आयामोंकृविशेषकर नाथ संप्रदाय के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा, कबीर की भांति अद्वैतवाद की स्थापना, और सगुण–निर्गुण भक्ति के समन्वयकृका सूक्ष्म अन्वेषण करता है। अपने प्रारंभिक जीवन में जालोर दुर्ग के घेरे के दौरान जब वे घोर निराशा में थे, तब आयस देवनाथ जी की भविष्यवाणी ने न केवल उनके प्राणों की रक्षा की, बल्कि उन्हें मारवाड़ का शासक भी बनाया। इसी घटना ने उनके हृदय में भक्ति का वह बीज बोया, जो कालांतर में विशाल वटवृक्ष बना। इस शोध–पत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि महाराजा मानसिंह का भक्ति–काव्य केवल पारंपरिक स्तुतिगान नहीं है, बल्कि यह हठयोग, नाथ दर्शन और व्यावहारिक आत्मानुभव का काव्यात्मक प्रकटीकरण है। उन्होंने डिंगल, पिंगल और राजस्थानी भाषा में सहस्रों पदों की रचना की और पाखंडों व बाह्य आडंबरों का कड़ा विरोध किया। प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। निष्कर्षतः, यह शोध यह स्थापित करता है कि महाराजा मानसिंह संत परंपरा को आगे बढ़ाने वाले और तत्कालीन समय में उसे जीवंत रखने वाले एक महान भक्त और दार्शनिक थे।

शब्दकोशः *महाराजा मानसिंह, भक्ति–काव्य, नाथ संप्रदाय, एकेश्वरवाद, अद्वैतवाद, निर्गुण उपासना, डिंगल साहित्य।*

प्रस्तावना

भक्ति काल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। यद्यपि हिंदी साहित्य के मुख्य पटल पर कबीर, सूर, तुलसी और मीरा जैसे संतों का नाम प्रमुखता से लिया जाता है, तथापि क्षेत्रीय स्तर पर, विशेषकर

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

राजस्थान में, कई ऐसे भक्त कवि हुए हैं जिनका साहित्यिक अवदान अत्यंत विशद और गहरा है। राजस्थान का साहित्य मुख्य रूप से 'चारण साहित्य' और 'वीर रस' के लिए विख्यात रहा है, परंतु इसके समानांतर यहाँ 'संत साहित्य' और 'भक्ति साहित्य' की एक अत्यंत सुदृढ़ और निर्बाध धारा भी प्रवाहित होती रही है। इसी भक्ति धारा के एक देदीप्यमान नक्षत्र मारवाड़ (जोधपुर) के शासक महाराजा मानसिंह राठौड़ हैं।

"जय महेश जय महेश सेवक हितकारी।
शंभुनाथ पकड़ो हाथ हो त्रिपुरारी।।
अन्तर्यामी हो नमामि शरण हम तुम्हारी।
पाँचों तत्व तीन गुण अन्तःकरण च्यारी"।।

महाराजा मानसिंह का राज्यारोहण 1803 ई. में विषम परिस्थितियों में हुआ। उत्तराधिकार के संघर्ष के दौरान जालोर दुर्ग के कष्टकारी घेरे में नाथ संप्रदाय के गुरु आयस देवनाथ जी ने उन्हें जालंधरनाथ जी का स्मरण करने का उपदेश दिया। यह घटना उनके जीवन का 'महत्वपूर्ण बदलावकारी घटना' बनी। उन्होंने नाथ संप्रदाय को राज्याश्रय प्रदान किया, परंतु उनका सबसे बड़ा योगदान शब्दों के माध्यम से भक्ति का वह मंदिर बनाना था, जो 'नाथ–पुराण' और उनके सहस्रों फुटकर पदों में आज भी विद्यमान है।

"अरज करूँ हो म्हारा नाथ जी,।
म्हारी अरजी सुणिये।।
ब्रह्म ज्ञान कैड़ो आप रो,।
उगरी गाथा गुणिये जी"।।

काव्यात्मक विश्लेषणः भक्ति, ज्ञान और अद्वैत का समन्वय

महाराजा मानसिंह के भक्ति–काव्य का गहराई से अध्ययन करने पर इसमें कई दार्शनिक परतें खुलती हैं, जो उन्हें कबीर और अन्य निर्गुण संतों की उच्च परंपरा में खड़ा करती हैंः

- **एकेश्वरवाद और भक्ति मार्ग की वास्तविकता**

महाराजा मानसिंह के काव्य में हमें स्पष्ट रूप से एकेश्वरवाद प्राप्त होता है। इसका मुख्य कारण उनका नाथ संप्रदाय में दीक्षित होना भी हो सकता है। वे ईश्वर की सहज प्राप्ति का वर्णन करते हुए लिखते हैंः

"ऐसा देव पाया मैंने, ऐसा देव पाया।
मुख से नहीं जाप करूं, बिना ही जाप गाया।।

इसके साथ ही, वे भक्ति मार्ग की कठिनता को भी भली–भांति समझते थे और चेताते हुए कहते हैं कि सच्ची लगन के बिना ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं हैः

"भक्ति भक्ति करत सब भूला है।
ओ तो भक्ति से मग रयो न्यारो रे साधो।।
भक्ति बिना भगवत कैसे पावे है,।
ए तो जागत नाँय गँवारा रे साधो।।

- **द्वैतवाद का विरोध एवं कबीर से साम्यः**

उन्होंने कबीर की तरह ही द्वैतवाद का कड़ा विरोध किया है। ईश्वर और जीव को अलग मानने वालों पर वे प्रहार करते हैं और कबीर के मगहर प्रसंग की ओर संकेत करते हुए कहते हैंः

"जबर है द्वैतवादी ये, नहीं निज पद दिखाते है।
मरे मगहर में हो पर मुक्ति काशी में पाते हैं"।।

- **निराकार ईश्वर की उपासनाः**

यद्यपि उन्होंने सगुण रूप में शिव और गुरु की स्तुति की है, परंतु अपने भक्ति काव्य के मूल में वे निराकार ईश्वर की ही बात करते हैं। गणेश जी की स्तुति में भी वे उनके निर्गुण और निराकार स्वरूप का ही ध्यान धरने को कहते हैंः

"सईयां गणपति गुण गावो ए।
निराकार निर्लेप गजानंद सोई मनावो ए।।
मूल महल में वही गणेशा, सोई निज ध्यावो ए।
ज्ञान मार्ग संग नित रहवो, बाहर न जावो ए"।।

- **व्यावहारिक आत्मज्ञान**

उनके काव्य में व्यावहारिक आत्म–ज्ञान के दर्शन होते हैं, जहाँ उन्होंने भक्ति को मूल रूप से मनुष्य के भीतर माना है। जहाँ कबीर कहते हैंकृ "मोको कहां ढूंढे बंदे मैं हूं तेरे पास में", इसी महान संत परंपरा को आगे बढ़ाने का काम महाराजा मानसिंह जी करते हैं। वे संसार के स्वार्थ को पहचानते हुए कहते हैंः

"मानसिंह संसार में, मौड़ी पड़ी पिछाण ।
सत्संगी मिलिया नहीं, मिल्या स्वार्थी आन"।।

- **प्रेम और ज्ञान का समन्वयः**

उन्होंने भक्ति मार्ग में 'प्रेम' और 'ज्ञान' दोनों को आवश्यक माना है। वे लिखते हैंः

"मरे न लाखों बात।
प्रेम पय पीवण लग्याँ ।।
ऊगे ज्ञान प्रभात।
मिटे अन्धारो मानसी" ।।

हालाँकि, वे कोरे किताबी या मौखिक ज्ञान को खतरनाक मानते हैं। इसी ज्ञानमार्ग पर वे सचेत करते हुए आगे लिखते हैं कि बिना आचरण के ब्रह्मज्ञान कागज़ की नाव के समान हैः

"कहने को ब्रह्मज्ञान सो, कीनो नहीं विचार।
कागद की सी नाव है डूबेगी मझधार"।।

- **पाखंड और बाह्य आडंबरों का विरोधः**

भक्ति मार्ग में वे पाखंड और आडंबर का भी पुरजोर विरोध करते हैं। वेद–शास्त्रों के रटने मात्र को वे व्यर्थ बताते हुए भीतर खोजने की प्रेरणा देते हैंः

"पण्डित किसको तू वेद सुनावे।
मेरे विचार खोज्या मैं मांही।
नहीं आवे नहीं जावे रे"।।

शोध के सोपान

प्रस्तुत शोध–पत्र ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक प्रकृति का है। इसे निम्नलिखित सोपानों के अंतर्गत संपन्न किया गया हैः

- विषय चयन एवं समस्या का निरूपणः 'शासक–भक्त' के रूप में महाराजा मानसिंह के काव्य (विशेषकर उनके अद्वैतवाद और ज्ञानमार्ग) का स्वतंत्र अकादमिक मूल्यांकन बहुत कम हुआ है। इसी शोध–अंतराल को इसका आधार बनाया गया।
- साहित्य की समीक्षाः राजस्थान के इतिहास और साहित्य के प्रमुख ग्रंथों का गहन अध्ययन कर विषय की पृष्ठभूमि को समझा गया।
- तथ्य एवं सामग्री संकलनः राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में उपलब्ध मानसिंह के मूल काव्यों, पदों और हस्तलिखित पांडुलिपियों का संकलन किया गया।
- तथ्यों का विश्लेषणः संकलित भजनों की भाषाशास्त्रीय एवं दार्शनिक व्याख्या की गई। कबीर की संत परंपरा के साथ महाराजा के पदों का तुलनात्मक अध्ययन किया गयज्ञं

शोध का महत्व

- साहित्यिक इतिहास का पुनर्लेखनः यह शोध महाराजा मानसिंह को 'भक्तिकाल और रीतिकाल के संधिकाल' के एक महान भक्त और दार्शनिक के रूप में स्थापित करता है।
- संत परंपरा का संरक्षणः यह स्पष्ट करता है कि महाराजा मानसिंह ने कबीर की व्यावहारिक आत्म–ज्ञान की परंपरा को राजपूताना में कैसे पोषित किया।
- राजधर्म और वैराग्य का दुर्लभ समन्वयः यह शोध उन प्रशासकों और आम जनमानस के लिए प्रेरणादायी है, जो यह मानते हैं कि कर्मक्षेत्र और अध्यात्म एक साथ नहीं चल सकते।
- डिंगल–पिंगल भाषा का संवर्धनः यह प्रमाणित करता है कि डिंगल भाषा 'भक्ति रस', 'ज्ञान मार्ग' और 'शांत रस' को अभिव्यक्त करने में भी पूरी तरह समर्थ है।

शोध के उद्देश्य

- दार्शनिक मूल्यांकनः महाराजा मानसिंह राठौड़ के काव्य में निहित 'एकेश्वरवाद', 'हठयोग' और 'व्यावहारिक आत्मज्ञान' का मूल्यांकन करना।
- सगुण–निर्गुण समन्वय की खोजः उनके काव्य में निराकार ब्रह्म की साधना और गुरु–भक्ति के अद्भुत समन्वय को रेखांकित करना।
- संत परंपरा से तुलनाः पाखंड–विरोध और अंतर्मन की खोज के संदर्भ में कबीर आदि संतों की विचारधारा से उनके काव्य का साम्य स्थापित करना।
- भाषा एवं शिल्प का अध्ययनः पदों में प्रयुक्त डिंगल, पिंगल भाषा के अंतर्संबंधों और काव्यात्मक उत्कृष्टता का विश्लेषण करना।
- ऐतिहासिक प्रभाव का आकलनः जालोर दुर्ग के संघर्षों का उनके मन में उपजे वैराग्य पर पड़े मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

विस्तृत विश्लेषण के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि महाराजा मानसिंह राठौड़ का भक्ति–काव्य राजपूताना के साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास की एक अमूल्य धरोहर है। उनका काव्य आदर्शवादी

कल्पनाओं से मुक्त और व्यावहारिक आत्म–ज्ञान पर आधारित है। सद्गुरु देवनाथ जी के प्रभाव से उन्होंने सत्ता को उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि आत्मानुभव का साधन माना।

उन्होंने सगुण और निर्गुण का अद्भुत समन्वय करते हुए एकेश्वरवाद की स्थापना की और कबीर की ही तरह बाह्य आडंबरों, पाखंडों तथा कोरे कागज़ी ब्रह्मज्ञान का कड़ा विरोध किया। इस प्रकार, निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि महाराजा मानसिंह जी 'संत परम्परा' को आगे बढ़ाने वाले एवं तत्कालीन समय में इसे जीवंत रखने की प्रेरणा देने वाले एक महान 'राजर्षि' थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. (1938). जोधपुर राज्य का इतिहास (भाग 1 और 2). अजमेरः वैदिक यंत्रालय।
2. भाटी, डॉ. नारायण सिंह. (1961). डिंगल साहित्य का इतिहास. जोधपुरः राजस्थानी शोध संस्थान।
3. शर्मा, डॉ. गोपीनाथ. (1971). राजस्थान का इतिहास. आगराः शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी।
4. मेनारिया, डॉ. मोतीलाल. (1983). राजस्थानी भाषा और साहित्य. प्रयागः हिंदी साहित्य सम्मेलन।
5. सिंह, ज़हूरबख्श. (संपादित). (1960). मान–काव्य कुसुमांजलि. जोधपुरः राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान।
6. स्वामी, नरोत्तमदास. (1960). राजस्थान का साहित्य और इतिहास. जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
7. महाराजा मानसिंह की हस्तलिखित पोथियाँ एवं बही, पुस्तक प्रकाश, मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर।.

❑❑❑